जीएं हिरिखी हीर, रांझे सां हिक-रसु थी,
तीएं मिली महबूब सां, लंघे लक लकीर
ज्ञाणी सभु सुपने जा, सामी चए सरीर,
ग्यानवान गुर, पीर, लख लखाइनि अन्भई.

जीवात्मा को परमात्मा से मिलने के लिए प्रेरित करने हेतु हीर-राँझा की प्रसिद्ध लोक-कथा का उदाहरण देकर सामीजी कहते हैं, हे मनुष्य ! हीर राँझा पर मोहित हो कर, उससे मिल कर एकरूप हो गयी थी, उसी प्रकार तुम भी अनेक कठिनाइयों को लाँघ कर अपने प्रियतम परमेश्वर से मिलने का जतन करो। हे मनुष्य, तुम अपने शरीर को सपने के समान असत्य और क्षणभंगुर जानो। यही बात ज्ञानवान गुरु भी समझाते हैं। सच्चे संत, पीर और फकीर मनुष्य के मन में आत्मज्ञान का प्रकाश फैलाने का कार्य करते हैं।

दुर्लभ मनुष्य-देह प्राप्त होना बड़े भाग्य का लक्षण है। इसे सफल बनाना मनुष्य का कर्त्तव्य है। मोक्ष-मुक्ति की प्राप्ति अंतिम उद्देश्य है। अपना उद्देश्य पूर्ण करने के लिए भक्ति या भगवान का स्मरण आवश्यक है। इसके लिए परमात्मा से अनन्य प्रेम जरूरी है। परंतु प्रेम का मार्ग बड़ा कठिन है। यह मार्ग कँटीला है, दुखदायी है। प्रेम या भक्ति का मार्ग कितना कठिन है, इस संबंध में कबीर कहते हैं-

भक्ति दुहेली राम की, नाहिं वयापर का काम।
सीस उतारे हाथ सों, ताहिं मिलै निज धाम।।

अर्थात् भक्ति के क्षेत्र में प्राण न्योछावर करने की भी तैयारी होनी चाहिए। संत मीराबाई का श्रीकृष्ण से प्रेम (भक्ति) इसी प्रकार का है। अनेक दु:खों को और लोक निंदा को सह कर भी, विष का प्याला पी कर भी उसने प्रेम का त्याग नहीं किया। सामीजी ने हीर राँझा का उदाहरण प्रस्तुत किया है। हीर ने राँझा से सच्ची प्रीति की थी। उससे मिलने के लिए उसने अनेक कष्ट सहे थे। वह अपने मार्ग से विचलित नहीं हुई थी। वह अपने प्रियतम के साथ एकरूप हो गयी थी। मनुष्य को भी परमात्मा से ऐसा ही अनन्य प्रेम करना चाहिए। इस कठिन मार्ग में, तलवार की धार पर चलने जैसे मार्ग में प्राण न्यौछावर करने के लिए तैयार रहना चाहिए। साधु संत भी यही बात कहते हैं। कबीर के शब्दो में-

कबीर निज घर प्रेम का, मारग अगम अगाध।
सीस उतारि पगतलि धरै, तब निकटि प्रेम का स्वाद।।

■